" अमा यार तुम तो उठने लगे। तफम्हारे लिए खास करके दूसरी अलमारी से निकलवा रहा हूँ"।

"आते ही तो पी थी।"

"अमा इतनी देर में तो लोग बोतलों से नाली भर देते हैं।"

"अभी एक जगह और जाना था, उन्होनें भी बुलाया था। बातचीत कर आया था, पन्द्रह हजार का ठेका दे रहे थे, मैंने सत्रह तक उनसे कह दिया था। जवाब लेने जाना है।"

"अमा ! चाहे जहाँ भी जाओ, मगर काली बाबू के यहाँ आकर, कोई भी आदमी किसी और के यहाँ नहीं गया। उसे अपने घर ही जाना पड़ता है। काली बाबू हर मेल का साँप पकड़ना जानता है। निकाल बे दुलारे ! अरे सूंघ क्या रहा है? कल जो ठिगनी वाली बोतलें आई हैं, उसी में से निकाल ले।"

का। शुरू हो गया। जाम पर जाम चढ़ने लगे। असल पर नकल का मुलम्मा चढ़ाया जाने लगा। खाली बोतलों के ढेर, सूखे पत्तों की तरह कोने घेरने लगे। टूटे हुये, छोटे-छोटे और बेतुके मिट्टी के कुल्हड़ जगह-जगह मादकता फैलाने लगे। मुहल्ले वाली देशी शराब की दूकान पर स्वागतम् का बोर्ड लगा दिया गया। लम्बी, ठिगनी, मँझोली, सफेद, काली और कत्थई बोतलों के जीवन से, काली बाबू जिन्दाबाद का नारा, इलाके भर में गूंज उठा। मादकता ने रंग दिखलाया तो इलाके के एक-एक धोबी, पासी, चमार, कहार और भंगियों की जबान पर काली बाबू का नाम चढ़ गया:

शराब, कबाब और पंजे-दस्से की ठोंक पर कसमें खरीदी जाने लगीं। गीता और कुरान के नाम पर सौदे तै होने लगे। धर्म और मजहब को खरीदने और बेचने वाले, बाजारों में काले साड़ों की तरह घूमने लगे। इसी बीच, फिर कई बार छुट्टन ने काली बाबू को, बोतलों का दाम बतलाया। काली बाबू को दो-तीन बार उनके हलके का मुआयना भी करवाया ' काली बाबू ने भी उस के इस दम-खम से, एक अद्धा और जोड़ दिया। छुट्टन उनके इस व्यवहार से निहाल हो उठा। अपने देवता को खुश करने के लिए उसने जाम के लबालब उस गिलास को इतने जोर से पटका कि उस ऊबड़-खाबड़ जमीन की रगों तक में काँच घुस गया। फैली हुई खुशबू से काली बाबू ने एक सिहरन सी महसूस की।

शराब का पानी गर्म होकर, खौलना शुरू हो गया। चुनाव के दिन नजदीक आने लगे। इस बीच छुटट्न ने सिर्फ एक बार, काली बाबू से एक हजार रुपया माँगा तो काली बाबू ने यह कह कर टाल दिया -"ले लेना यार, घबराते क्यों हो ?सारी कसर पूरी कर दूंगा।" छुट्टन का कलेजा एक हाथ और आगे बढ़ गया।

चुनाव का दिन आ गया। काली तो हमेशा से अपनी पोशाक पहनता ही था, छुट्टन ने भी आज खाल वाली टोपी उतार कर, 'गांधी कैप' लगा ली। दाढ़ी-मूंछें छोटी करवा के, माँग निकाले, वास्कट में छुट्टन भी आज पूरा नेता मालूम पड़ रहा था। उसकी पार्टी के सारे लोग आज जी जान से जुटे थे। मुहल्ले के सब लोगों को हिदायत थी कि दोपहर के बाद जैसे भी कोई बुलाने आयेगा, उन्हें जाना होगा। यें ही नहीं मुहल्ले में माननीय और सभ्य घरों में भी छुट्टन रोज की तरह आज एक बार फिर सलाम करने गया था।

सुबह, उसने अपनी पार्टी वालों से फेर एक बार बुला कर कहा था-"चाँद की रोशनी छिपा दो ! सांप को जहर पिला दो ! एक महीने तक बोतलें फ्री बँटवा दूंगा।"

सुबह से ही मुहल्ले में हंगामा सा मचा हुआ था। बात यह भी थी कि अबकी बार दूसरी पार्टी भी घुटने उठा कर चल रही थी। जितनी भी शिक्षित और सभ्य जनता थी, सब उसका समर्थन कर रही थी। मतदान शुरू होने पर, आज काली बाबू ने बतौर शर्बत के एक काले रंग की बोतल छुट्टन को अपने हाथ से पिलाई थी, पहले तो एक हलकी सी खुमारी के बाद छुट्टन की आँखें कुछ सुर्ख हो गई थीं। बाद में उसने अपने आप को सँभाल लिया था।

सुबह का दौर बराबर का जाने के बाद सामने वाली पार्टी का कैम्प एक बार खचाखच भर गया था, पण्डाल के बाहर तक औरतें अपने बच्चों को लिये, धूप में तप रही थीं। इस पर काली बाबू ने एक जहरीले अन्दाज से छुट्टन से पूछा था-"बारह बोर वाली कारतूस का दाम क्या है ?" इस पर छुट्टन ने भी अपनी आँखों के लाल डोरों को खिसकाते हुए बड़े गौर से देखा था। छुट्टन इस वक्त खून का एक घूंट पीकर रह गया था।

दो बजे के बाद जब दूसरा दौर शुरू हुआ था, काली बाबू की आँखें, फट-फट कर रह गई थीं। मुहल्ले का एक-एक रिक्शेवाला उसके वोटरों को लिये हाँफता हुआ चला आ रहा था। छुट्टन की पार्टी ने जैसे फंसील कर तोपें चढ़ा दी थीं। कैम्प में बरकदार पान और पानी की होली सी चल रही थी। बहुत काफी देर तक यह दौर तेजी से चल गया था। इस बीच छुट्टन ने काली बाबू से एक बार यह भी कहा था-"मुझे अबकी बार पसीना आ गया है, पीने के बाद उगलना भी पड़ गया। लाला बाबू कल रात भर 'बन्दा' नाले की ही खुशबू सूंघता रहा है। लाला बाबू जिन्दगी में तुम्हें ऐसा आदमी नहीं मिलेगा। मुझे अपनी पार्टी पर हमेंशा से नाज रहा है लाला बाबू।"

छुट्टन पर काली बाबू हमेशा से नाज करता आया है, परवाह न करो काली बाबू सीने में शेर का दिल रखता है।" काली बाबू ने पीठ पर हाथ फेरते हुये कहा।

एक जबरदस्त टक्कर के बाद पाँच बजे यह आलम खत्म हुआ। खत्म होने के बाद हवा का रुख देखते हुए छुट्टन ने काली बाबू से ही कह डाला-"खून बेचा है खून, लाला बाबू खून बेचा है खून। हा ! हा!! हा!!! काली बाबू की जै ! काली बाबू की जै !!" और इसके साथ ही पूरी पार्टी ने जयघोष कर डाला था। काली बाबू ने देखा था-उसकी आँखों के लाल डोरों से शायद अब खून ही टपक रहा था।

चुनाव के धन्धे की महफिल आज खुशनुमा शाम को, रात में बदल कर खत्म हो गई थी।

चौथे दिन एक भड़भड़ करती हुई ट्रक ने मुहल्ले और आस पास के इलाके की एक-एक ईंट में काली बाबू का नाम खोद दिया था। जाम के आगे और नोट के पीछे, इन्सान की कीमत हमेशा की तरह खत्म हो गई थी, मुहल्ले की पान की दूकान पर, गलियों के मोड़ पर, चौराहों पर हफ्तों तक इसकी चर्चा रही थी। और उसी दिन शाम को छुट्टन को बेले का हार खुद पहनाया था। इस पर छुट्टन ने एक कश लिया था-"लाला बाबू अबकी बार खून बेचा है खून। हा ! हा ! ! हा ! ! !और उसने काली बाबू के नाम का एक काला नारा बुलन्द कर डाला था। आज काली बाबू उसके इस व्यवहार से कुछ सहम सा गया था।